कविता

यश मालवीय

रामेश्वरम , ए - 111 मेंहदौरी कॉलोनी इलाहाबाद

एक फरमाइश मिली झुमरी तलैया से

नाव कुछ-कुछ कह रही
अपने खिवइया से
एक फरमाइस मिली
झुमरी तलैया से

रेडियो में आज फिर से
नाम वो गूँजा
गीत ही से मिल गया
पैगाम जो गूँजा

सुबह जागी,
सोरठा दोहा , सवैया से

मौज गंगा की
कि जमुना की खिली धारा
झिलमिलाया घाट पर ही
भोर का तारा

बहुत सी बातें हुईं
फिर मनबसैया से

गुड़ चना लाई ,
सुबह से शाम छठ पूजा
एक तू ही , सिर्फ तू ही
नहीं कुछ दूजा

माँग लें कुछ चलो
भाभी और भइया से

इलाहाबाद आकाशवाणी का स्थापना गीत –कि ये आकाशवाणी है

कि ये आकाशवाणी है
कि ये आकाशवाणी है
इसकी भाव भंगिमा की
महिमा कल्याणी है
कि ये आकाशवाणी है

बच्चन पंत महादेवी की
गूँजी इसमें बानी
बिस्मिल्ला की शहनाई ने
सच कहने की ठानी
इसके तेवर में फिराक की
ग़ज़लों का है पानी
बीते कितने बरस
कि इसकी चूनर अब भी धानी

है साझा तहजीब
कि मुद्रा हिंदुस्तानी है
कि ये आकाशवाणी है

भीमसेन जोशी , कुमार गंधर्व
कशालकर जैसे
अपने स्वर से रहे भिगोते
साधक कैसे -कैसे
रहे जोड़ते अश्क और जोशी
जीवन की लय से
सत्यमेव जयते के इसके
बोल बहुत निर्भय से

विविध भारती की पल -पल
करता अगवानी है
कि ये आकाशवाणी है

सरस्वती का रूप यही
संगम की उजली धारा
इसकी दीवारें अतीत का
वैभव जैसे सारा
इसके आगे स्वयं काल भी
दिखता हारा -हारा

पूरा भारत वर्ष कहे
ये अमर कहानी है
कि ये आकाशवाणी है ❖